

न्यूज़ टुडे

मत्स्यपालन, पशुपालन और डेयरी मंत्रालय (MoFAH&D) ने विश्व मत्स्य पालन दिवस 2024 मनाया

- ▶ विश्व मत्स्य पालन दिवस (World Fisheries Day) 2024 की थीम थी: इंडियाज ब्लू ट्रांसफॉर्मेशन: स्ट्रेथनिंग स्मॉल-स्केल एंड सस्टेनेबल फिशरीज।
- ▶ इस दौरान शुरू की गई मुख्य पहलें
 - ⊕ डेटा आधारित नीति-निर्माण के लिए 5वीं मरीन फिशरीज़ गणना।
 - ⊕ संधारणीय शार्क प्रबंधन के लिए शार्क पर राष्ट्रीय कार्य योजना।
 - ⊕ श्रीलंका, बांग्लादेश और मालदीव के सहयोग से बंगाल की खाड़ी क्षेत्र में अवैध, असूचित और अविनियमित (IUU) मत्स्यन गतिविधियों को रोकने के लिए IUU मत्स्यन पर क्षेत्रीय कार्य योजना को भारत का समर्थन।
 - ⊕ समुद्र में प्लास्टिक कचरे से निपटने के लिए अंतरराष्ट्रीय समुद्री संगठन-खाद्य एवं कृषि संगठन (IMO-FAO) की ग्लोबल साझेदारी परियोजना।
 - ⊕ समुद्री मत्स्यन हेतु प्रयुक्त होने वाली नौकाओं व पोतों के लिए कम लागत वाले ईंधन को बढ़ावा देने हेतु रेट्रोफिटिंग LPG किटों के लिए मानक संचालन प्रक्रियाएं।
 - ⊕ तटीय जलकृषि फार्मों के ऑनलाइन पंजीकरण को सक्षम करने के लिए नवीन सिंगल विंडो सिस्टम।
 - ⊕ केरल को सर्वश्रेष्ठ समुद्री राज्य का पुरस्कार और तेलंगाना को सर्वश्रेष्ठ अंतर्देशीय राज्य का पुरस्कार प्रदान किया गया।
- ▶ मत्स्य पालन क्षेत्रक का महत्त्व
 - ⊕ आजीविका का साधन: यह लगभग 3 करोड़ मछुआरों और मत्स्य कृषकों सहित संबंधित मूल्य श्रृंखला में व्यापक रोजगार के अवसर प्रदान करता है।
 - ⊕ पोषण युक्त मछली पशु आधारित प्रोटीन का एक सस्ता और समृद्ध स्रोत है। इस कारण यह भुखमरी एवं पोषक तत्वों की कमी को दूर करने के लिए सबसे स्वस्थ विकल्पों में से एक है।
 - ⊕ आर्थिक संवृद्धि: FAO, 2018 के आंकड़ों के अनुसार मछली उत्पादन भारत के सकल घरेलू उत्पाद में लगभग 1% और कृषि के सकल घरेलू उत्पाद में 5% से अधिक का योगदान देता है।

भारत के मत्स्य पालन क्षेत्रक के बारे में

- ▶ भारत विश्व का दूसरा सबसे बड़ा मछली उत्पादक देश है। साथ ही, यह वैश्विक मत्स्य उत्पादन में 8% का योगदान भी देता है। भारत जलीय कृषि आधारित उत्पादन के मामले में दूसरे स्थान पर है और झींगा के उत्पादन एवं निर्यात में अग्रणी भी है।
- ▶ भारत कैम्बर फिशरीज में सबसे बड़े उत्पादकों में से एक है।

मत्स्य पालन क्षेत्रक को बढ़ावा देने के लिए शुरू की गई अन्य पहलें

- ▶ प्रधान मंत्री मत्स्य संपदा योजना (PMSSY);
- ▶ प्रधान मंत्री मत्स्य किसान समृद्धि सह-योजना (PMKSY);
- ▶ राष्ट्रीय मत्स्य विकास बोर्ड की स्थापना 2006 में मत्स्यपालन, पशुपालन और डेयरी मंत्रालय (MoFAH&D) के तहत एक स्वायत्त संगठन के रूप में की गई थी;
- ▶ मात्स्यिकी और जलीय कृषि अवसंरचना विकास निधि (FIDE) आदि।

CAI और FMS ने भारत के संदर्भ में वर्क फ्रॉम होम (WFH) के संबंध में संयुक्त अध्ययन जारी किया

- ▶ इस अध्ययन में भारतीय संदर्भ में वर्क फ्रॉम होम के लागत-लाभ विश्लेषण को उजागर किया गया है।
- ▶ वर्क फ्रॉम होम के लाभ
 - ⊕ संगठनात्मक स्तर पर:
 - ◆ ऑफिस के किराये, कर्मचारियों, ग्राहकों आदि के साथ मीटिंग के मामले में 25% से अधिक की बचत होती है।
 - ◆ उत्पादकता: ऑफिस आने-जाने से संबंधित तनाव में कमी से कर्मचारियों की उत्पादकता और ऊर्जा का स्तर बढ़ जाता है।
 - ⊕ कंपनी को अन्य लाभ: इसमें कंपनी को निम्नलिखित लाभ मिलते हैं-
 - ◆ उसके कार्बन फुटप्रिंट में कमी आती है;
 - ◆ उसके पर्यावरणीय, सामाजिक और गवर्नेंस (ESG) संबंधी लक्ष्यों को पूरा करने में मदद मिलती है;
 - ◆ भौगोलिक रूप से दूर रहने वाले प्रतिभावान लोगों की भर्ती करने का विकल्प मिलता है आदि।
 - ⊕ कर्मचारी स्तर पर:
 - ◆ बचत: ऑफिस आने-जाने के समय और लागत में कमी आती है; ऑफिस से दूर काम किराए वाले क्षेत्रों में रहने का विकल्प मिल जाता है आदि।
 - ◆ पारिवारिक संबंध: परिवार के साथ बेहतर संबंध बने रहते हैं, छोटे बच्चों वाले माता-पिता और देखभाल करने वालों के लिए लाभकारी विकल्प है; बेहतर वर्क-लाइफ संतुलन बनता है आदि।
- ▶ वर्क फ्रॉम होम के नकारात्मक प्रभाव
 - ⊕ संगठनात्मक स्तर पर: इसमें कम प्रभावी संचार से टीमवर्क पर असर पड़ना; संगठनात्मक संस्कृति के विकास और प्रगति में बाधा आना आदि शामिल हैं।
 - ⊕ कर्मचारी स्तर पर: इसमें बार-बार व्यवधान, काम को लेकर लापरवाही, घर पर निर्बाध कार्यस्थल के अभाव के कारण तनाव में वृद्धि होना आदि शामिल हैं।
 - ◆ पारिवारिक संबंध: घरेलू हिंसा की घटनाओं में वृद्धि, महिलाओं पर दबाव बढ़ना आदि।
- ▶ आगे की राह: हाइब्रिड कार्यप्रणाली वह पद्धति है, जिसमें कर्मचारियों से सप्ताह में कुछ दिन ऑफिस आने की अपेक्षा की जाती है। इसका उद्देश्य आमने-सामने बैठ कर काम करने के फायदों को वर्क फ्रॉम होम के लाभों के साथ बेहतर तरीके से जोड़ना है, ताकि कार्यक्षमता एवं संतुलन दोनों बनाए रखे जा सकें।

CoP-29 में विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) ने "जलवायु परिवर्तन और स्वास्थ्य" पर रिपोर्ट जारी की

इस रिपोर्ट में स्वास्थ्य के नजरिये से सभी लोगों, स्थानों और संपूर्ण पृथ्वी ग्रह को ध्यान में रखते हुए जलवायु कार्रवाई के महत्त्व को रेखांकित किया गया है (इन्फोग्राफिक देखिए)।

स्वास्थ्य पर जलवायु परिवर्तन के प्रभाव

⊕ प्रत्यक्ष प्रभाव:

- ◆ गैर-संचारी रोग (NCD): जलवायु परिवर्तन और वायु प्रदूषण गैर-संचारी रोगों से होने वाली 85% मौतों के लिए जिम्मेदार हैं।
- ◆ हीट स्ट्रेस: जलवायु परिवर्तन के कारण लोगों को 2023 में स्वास्थ्य के लिए खतरनाक गर्मी के 50 अधिक दिनों का सामना करना पड़ा था।
- ◆ मातृ एवं प्रजनन स्वास्थ्य पर प्रभाव: जलवायु परिवर्तन की वजह से समय से पहले प्रसव (प्रीटर्म लेबर), अल्पवजनी बच्चे का जन्म लेना, प्रसव के दौरान मातृ मृत्यु, बंध्यापन जैसे प्रभाव देखे जा रहे हैं।

⊕ अप्रत्यक्ष प्रभाव:

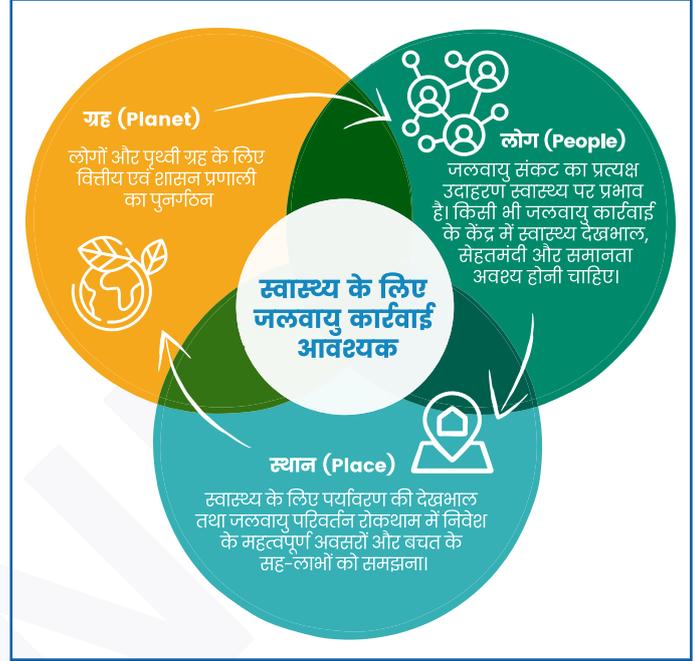
- ◆ गरीबी रेखा में चले जाने और हाशिए पर जाने की दर में वृद्धि हो रही है;
- ◆ खाद्य और जल संकट बढ़ रहे हैं;
- ◆ संघर्ष और पलायन में वृद्धि हो रही है, आदि।
- » 2023 में, मौसम संबंधी आपदाओं के कारण 20.3 मिलियन लोगों को अपने मूल निवास स्थान से विस्थापित होकर देश में ही किसी अन्य जगह जाना पड़ा था।

रिपोर्ट के मुख्य सुझाव

- ⊕ मानव और पशु स्वास्थ्य तथा पारिस्थितिकी-तंत्र की सुरक्षा के बीच संबंधों से जुड़ी समस्याओं को दूर करने के लिए वन हेल्थ एप्रोच को लागू करना चाहिए।
- ⊕ संसाधनों के दोहन वाली आर्थिक प्रणाली की जगह सर्कुलर इकॉनमी को अपनाना चाहिए।
- ⊕ जलवायु वित्त-पोषण के लिए नए सामूहिक परिमाणित लक्ष्य (NCQG) को अपनाया सुनिश्चित करना चाहिए। साथ ही, "हानि एवं नुकसान कोष" (Loss and Damage Fund) व्यवस्था में पर्याप्त फंड सुनिश्चित करना चाहिए।
- ⊕ स्वास्थ्य के विषय को राष्ट्रीय जलवायु कार्रवाई योजनाओं में एकीकृत करना चाहिए। इन योजनाओं में राष्ट्रीय स्तर पर निर्धारित योगदान (NDCs), राष्ट्रीय कार्य योजना (NAP) आदि शामिल हैं।

शुरू की गई मुख्य पहलें

- ⊕ केंद्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय ने "जलवायु परिवर्तन और मानव स्वास्थ्य पर राष्ट्रीय कार्यक्रम" शुरू किया है;
- ⊕ केंद्र सरकार के विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग ने "जलवायु परिवर्तन एवं स्वास्थ्य पर नेटवर्क" कार्यक्रम शुरू किया है आदि।



जलवायु और स्वच्छ वायु गठबंधन (CCAC) तथा खाद्य एवं कृषि संगठन (FAO) ने "वैश्विक नाइट्रस ऑक्साइड (N₂O) आकलन रिपोर्ट" जारी की

यह आकलन रिपोर्ट अजरबैजान के बाकू में आयोजित जलवायु परिवर्तन पर COP-29 में जारी की गई है। यह विगत एक दशक से भी अधिक समय से केवल N₂O पर केंद्रित पहली अंतरराष्ट्रीय रिपोर्ट है।

रिपोर्ट के मुख्य बिंदुओं पर एक नजर

⊕ यदि N₂O उत्सर्जन अपनी वर्तमान दर से बढ़ता रहा, तो वैश्विक तापमान को 1.5° सेल्सियस तक सीमित करने का कोई संभावित मार्ग नहीं रहेगा।

- ◆ वर्तमान वैश्विक तापमान में N₂O का हिस्सा 0.1° C है।
- ⊕ 1980 के बाद से मानवजनित गतिविधियों से N₂O के उत्सर्जन में वैश्विक स्तर पर 40% की वृद्धि हुई है। इसमें से लगभग 75% उत्सर्जन कृषि में सिंथेटिक उर्वरकों और खाद के उपयोग से हुआ है।
- ⊕ N₂O ओजोन परत को नुकसान पहुंचाने वाला प्रमुख तत्व है। इससे हानिकारक अल्ट्रावायलेट (UV) का जोखिम बढ़ गया है।
- ◆ इस जोखिम की वजह से मोतियाबिंद का खतरा 0.2-0.8% और स्किन कैंसर का खतरा 2-10% तक बढ़ गया है।

N₂O उत्सर्जन को कम करने के लिए सुझाए गए उपाय

- ⊕ कृषि क्षेत्रक: उर्वरक दक्षता बढ़ानी चाहिए, नाइट्रीकरण अवरोधकों को अपनाया चाहिए तथा उर्वरकों से पोषक तत्वों की निकासी को धीमा करने वाले फॉर्म्यूलेशन का उपयोग करना चाहिए। इससे N₂O उत्सर्जन में कमी आएगी।
- ⊕ औद्योगिक क्षेत्रक: तापीय प्रक्रिया से नष्ट करके या उत्प्रेरक प्रक्रियाओं को अपनाकर एडिपिक एसिड और नाइट्रिक एसिड से उत्सर्जन के प्रबंधन में 90-99% दक्षता प्राप्त की जा सकती है।
- ◆ एडिपिक एसिड सिंथेटिक फाइबर व फोम में उपयोग किया जाता है।
- ◆ नाइट्रिक एसिड उर्वरक उत्पादन में उपयोग किया जाता है।
- ⊕ जीवाश्म ईंधन के उपयोग में कमी: परिवहन और ऊर्जा उत्पादन में नवीकरणीय संसाधनों के उपयोग को बढ़ाना चाहिए।
- ⊕ खाद प्रबंधन: इसमें पशु आहार में पोषक तत्वों के इनपुट को संतुलित करना, अधिक चराई को कम करना, खाद की अवायवीय पाचन (Anaerobic digestion) प्रक्रिया को बढ़ावा देना आदि शामिल हैं।
- ⊕ बहुपक्षीय समझौतों को लागू करना: कन्वेंशन ऑन लॉन्ग-रेंज ट्रांसबाउंड्री एयर पॉल्यूशन (LRTAP) के गोथेनबर्ग प्रोटोकॉल में अमोनिया और नाइट्रोजन ऑक्साइड के उत्सर्जन को कम करने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है।

नाइट्रस ऑक्साइड (N₂O) के बारे में

- ⊕ यह वायुमंडल में लंबे समय तक बने रहने वाली ग्रीनहाउस गैस है। इसमें CO₂ की तुलना में वायुमंडल को गर्म करने की लगभग 270 गुना अधिक क्षमता है।
- ⊕ यह गैस वायुमंडल में लगभग 114 वर्ष तक रह सकती है।
- ⊕ उत्सर्जन के स्रोत:
 - ⊕ प्राकृतिक स्रोत: मृदा और महासागरों में सूक्ष्मजीवों की गतिविधियां;
 - ⊕ मानवजनित गतिविधियां: उर्वरक, अपशिष्ट जल आदि।
- ⊕ अन्य संबंधित महत्वपूर्ण तथ्य: यह अकार्बनिक गैस है और इसे आमतौर पर 'लाफिंग गैस' भी कहा जाता है। यह पारदर्शी, रंगहीन, गंधहीन और जल में घुलनशील गैस है। इसके वाष्प हवा से भारी होते हैं।

जलवायु और स्वच्छ वायु गठबंधन (CCAC) के बारे में

- ⊕ इसकी स्थापना 2012 में हुई थी। इसे संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम (UNEP) के तहत आयोजित किया जाता है।
- ⊕ इसमें 160 से अधिक सरकारों, अंतर-सरकारी संगठनों और गैर-सरकारी संगठनों की एक स्वेच्छिक साझेदारी है।
- ⊕ भारत 2019 में CCAC में शामिल हुआ था।
- ⊕ यह संगठन वार्मिंग की अधिक क्षमता वाले, लेकिन ऐसे अल्पकालिक जलवायु प्रदूषकों को कम करने के लिए कार्य करता है, जो जलवायु परिवर्तन और वायु प्रदूषण दोनों को बढ़ावा देते हैं।

रूस के राष्ट्रपति ने संशोधित परमाणु सिद्धांत को मंजूरी प्रदान की

- रूस ने अपने 2020 के परमाणु सिद्धांत को अपडेट किया है। इस सिद्धांत में शत्रुओं को रोकने में परमाणु हथियारों की भूमिका की पुष्टि की गई है और उपयोग की संभावित परिस्थितियों को परिभाषित किया गया है।
- परमाणु सिद्धांत: यह परमाणु हथियारों के उद्देश्य, विकास और तैनाती के साथ-साथ उनके इच्छित उपयोग को भी परिभाषित करता है।
- रूस के संशोधित परमाणु सिद्धांत के बारे में
 - परमाणु हमले की विस्तारित परिभाषा: किसी परमाणु हथियार संपन्न राष्ट्र द्वारा समर्थित किसी परमाणु हथियार विहीन राष्ट्र द्वारा रूस के खिलाफ किसी भी आक्रमण को संयुक्त हमला माना जाएगा और यह परमाणु प्रतिशोध को उचित ठहराएगा।
 - इसमें स्पष्ट रूप से उन देशों का उल्लेख किया गया है, जो रूस के खिलाफ आक्रमण के लिए अपने क्षेत्रों का उपयोग करने की अनुमति दे रहे हैं।
 - परमाणु प्रतिक्रिया सीमा को कम करना: रूसी परमाणु सिद्धांत का विस्तार राष्ट्र के अस्तित्व की रक्षा से लेकर संप्रभुता और क्षेत्रीय अखंडता की रक्षा तक हो गया है।
 - बेलारूस को औपचारिक रूप से रूस के परमाणु छत्र के अंतर्गत रखा गया।
 - संभावित परमाणु प्रतिक्रिया को बढ़ावा देने वाले नए जोखिमों में शामिल हैं: रूसी सीमाओं के निकट सैन्य गठबंधनों का विस्तार और बड़े पैमाने पर सैन्य अभ्यास; रूसी सीमाओं के निकट शत्रुओं के सैन्य बुनियादी ढांचे की स्थापना।
- रूस के संशोधित परमाणु सिद्धांत के संभावित प्रभाव
 - परमाणु प्रसार में वृद्धि: संशोधित परमाणु सिद्धांत सामरिक परमाणु युद्ध के उपयोग की संभावना को बढ़ाता है।
 - परमाणु अप्रसार व्यवस्था को कमजोर करना: संशोधित सिद्धांत से देशों को परमाणु हथियार कार्यक्रमों को छोड़ने के लिए राजी करने में कठिनाई बढ़ सकती है।
 - अविश्वास में बढ़ोतरी: रूस की कम होती परमाणु सीमा (Nuclear threshold) तथा "चरम परिस्थितियों" की विस्तारित परिभाषा से रूस और अमेरिका के बीच अविश्वास बढ़ सकता है।
 - यहां परमाणु सीमा से आशय युद्ध में परमाणु हथियारों का सहन सीमा से पहले ही उपयोग करने से है।

भारत के परमाणु सिद्धांत (2003) के बारे में

- पहले उपयोग नहीं (No First Use): भारत परमाणु हथियारों का पहले उपयोग नहीं करेगा।
- विश्वसनीय न्यूनतम प्रतिरोध (Minimum Deterrence): भारत संभावित हमलावरों को रोकने के लिए न्यूनतम परमाणु शस्त्रागार बनाए रखेगा।
- व्यापक जवाबी कार्रवाई: परमाणु हमले की स्थिति में भारत व्यापक परमाणु हमले से जवाब देगा।
- असैन्य नियंत्रण: परमाणु हमले के स्थिति में जवाबी हमला करने का आदेश देने का अधिकार केवल असैन्य-राजनीतिक नेतृत्व के पास होगा। यह नियंत्रण परमाणु कमान प्राधिकरण (NCA) के माध्यम से होगा।
- परमाणु हथियार विहीन देशों के खिलाफ परमाणु हथियारों का उपयोग न करना: भारत परमाणु हथियार नहीं रखने वाले देशों के खिलाफ परमाणु हथियारों का इस्तेमाल नहीं करेगा।

भारत और मालदीव ने स्थानीय मुद्राओं में सीमा-पार लेन-देन को बढ़ावा देने के लिए समझौता किया

- भारतीय रिजर्व बैंक (RBI) और मालदीव मौद्रिक प्राधिकरण (MMA) ने सीमा-पार लेन-देन के लिए स्थानीय मुद्राओं के उपयोग को बढ़ावा देने हेतु एक फ्रेमवर्क स्थापित करने के लिए समझौता ज्ञान पर हस्ताक्षर किए हैं।
 - उल्लेखनीय है कि भारत, रुपये का अंतर्राष्ट्रीयकरण करने और अमेरिकी डॉलर पर अपनी निर्भरता को कम करने के प्रयासों के तहत स्थानीय मुद्राओं के उपयोग को बढ़ावा दे रहा है।
- मुद्रा (रुपये) के अंतर्राष्ट्रीयकरण के बारे में:
 - मुद्रा के अंतर्राष्ट्रीयकरण को राष्ट्रीय मुद्रा के मूलभूत कार्यों के अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर विस्तार के रूप में वर्णित किया जाता है। राष्ट्रीय मुद्रा मुख्यतः लेखा इकाई, विनिमय के माध्यम और मूल्य के भंडार के रूप में कार्य करती है।
 - उदाहरण के लिए, इसमें चालू खाता लेन-देन और विदेश व्यापार के लिए रुपये के उपयोग को बढ़ावा देना शामिल है।
- रुपये के अंतर्राष्ट्रीयकरण का महत्त्व
 - व्यापार संबंधी जोखिमों को कम करना: रुपये का अंतर्राष्ट्रीयकरण घरेलू कंपनियों को स्थानीय मुद्रा में अंतर्राष्ट्रीय व्यापार का इनवॉइस बनाने और निपटान करने में सक्षम बनाता है। इससे विनिमय दर से जुड़े जोखिम कम हो जाते हैं।
 - व्यापक वित्तीय पहुंच: घरेलू संस्थाएं अंतर्राष्ट्रीय बाजारों का लाभ उठा सकती हैं। ऐसा इस कारण, क्योंकि रुपये का अंतर्राष्ट्रीयकरण होने से बाह्य स्रोतों से पूंजी प्राप्त करने की लागत कम जाएगी और वित्त-पोषण विकल्पों का विस्तार होगा।
 - रिजर्व प्रबंधन: भुगतान संतुलन को स्थिर रखने के लिए अपेक्षाकृत कम विदेशी मुद्रा भंडार की आवश्यकता होगी। साथ ही, विदेशी मुद्राओं पर भी निर्भरता कम होगी। इससे वैश्विक मुद्रा आघातों के प्रति अर्थव्यवस्था की सुभेद्यता में कमी आएगी।
- रुपये के अंतर्राष्ट्रीयकरण में मौजूद चुनौतियां
 - शुरुआती दौर में रुपये की विनिमय दर में अस्थिरता बढ़ सकती है।
 - ट्रिफिन दुविधा की स्थिति उत्पन्न होगी। इसका अर्थ है कि वैश्विक मांग को पूरा करने के लिए अपनी अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा की आपूर्ति करने हेतु देश का दायित्व उसकी घरेलू मौद्रिक नीतियों के साथ टकराव पैदा कर सकता है।
 - अप्रतिबंधित सीमा-पार पूंजी प्रवाह के कारण अंतर्राष्ट्रीय आघातों के प्रति जोखिम में वृद्धि होगी।

रुपये के अंतर्राष्ट्रीयकरण की दिशा में उठाए गए कदम

- RBI ने अंतर्राष्ट्रीय व्यापार के लिए भारतीय रुपये में इनवॉइस बनाने एवं भुगतान करने की अनुमति दी है।
- रुपये को अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा के रूप में बढ़ावा देने के लिए स्पेशल रुपया वोस्ट्रो अकाउंट सिस्टम को शुरू किया गया है।
- भारत ने जापान, श्रीलंका और भूटान जैसे देशों के साथ मुद्रा विनिमय समझौतों पर हस्ताक्षर किए हैं।

अन्य सुर्खियां



अंतर्राष्ट्रीय आपराधिक न्यायालय (ICC)

- हाल ही में, ICC ने गाजा संघर्ष में कथित युद्ध अपराधों के लिए इजरायल के प्रधान मंत्री और हमास नेता के खिलाफ गिरफ्तारी वारंट जारी किया।
- अंतर्राष्ट्रीय आपराधिक न्यायालय (ICC) के बारे में:
 - युद्ध अपराध, नरसंहार, मानवता के खिलाफ अपराध और आक्रामकता के अपराध करने के आरोपी व्यक्तियों की जांच करने व उन पर मुकदमा चलाने के लिए स्थापित पहला अंतर्राष्ट्रीय स्थायी न्यायालय है।
 - यह एक स्वतंत्र न्यायिक संस्था है। यह संयुक्त राष्ट्र का हिस्सा नहीं है। हालांकि, संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद ICC के अभियोजक को कुछ मामलों की जांच सौंप सकती है।
 - स्थापक संधि: ICC की स्थापना रोम संधि (Rome Statute) से हुई है। यह संधि 2002 में लागू हुई थी। इस संधि पर संयुक्त राष्ट्र फ्रेमवर्क के तहत समझौता हुआ था।
 - सदस्य: 124 सदस्य।
 - भारत, इजरायल, संयुक्त राज्य अमेरिका, रूस और चीन ICC के सदस्य नहीं हैं।
 - मुख्यालय: द हेग (नीदरलैंड)।



आसियान रक्षा मंत्रियों की बैठक-प्लस (ADDM- Plus)

- भारत के रक्षा मंत्री ने लाओ पीडीआर के वियतनाम में 11वें ADDM- प्लस के अवसर पर संयुक्त राज्य अमेरिका के रक्षा मंत्री से भेंट की।
- ADDM- प्लस के बारे में
 - इसमें आसियान के 10 सदस्य देश और 8 संवाद साझेदार शामिल हैं।
 - संवाद साझेदारों में ऑस्ट्रेलिया, चीन, भारत, जापान, न्यूजीलैंड, कोरिया गणराज्य, रूस और संयुक्त राज्य अमेरिका शामिल हैं।
 - ADDM- प्लस की पहली बैठक 2010 में वियतनाम की राजधानी हनोई में आयोजित हुई थी।
 - 2017 से, ADDM-प्लस के मंत्री आसियान और आसियान प्लस देशों के बीच संवाद व सहयोग को आगे बढ़ाने के लिए प्रतिवर्ष बैठक करते हैं।
 - इसका उद्देश्य क्षेत्र में शांति, स्थिरता और विकास सुनिश्चित करने के लिए सुरक्षा एवं रक्षा सहयोग को मजबूत करना है।
 - इसमें व्यावहारिक सहयोग के सात क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित किया गया है। ये क्षेत्र हैं- समुद्री सुरक्षा, आतंकवाद से निपटना, मानवीय सहायता और आपदा राहत (HADR), शांति अभियान, सैन्य चिकित्सा, मानवीय दृष्टि से लैंडमाइन हटाने की कार्रवाई और साइबर सुरक्षा।



विज्ञान (VISION) पोर्टल

- केन्द्रीय विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्री ने विज्ञान पोर्टल का शुभारंभ किया।
- यहां विज्ञान (VISION) से आशय है- विकसित भारत इनिशिएटिव फॉर स्टूडेंट इनोवेशन एंड आउटरीच नेटवर्क।
- विज्ञान पोर्टल के बारे में
 - इसका उद्देश्य वंचित बच्चों में शिक्षा, कौशल विकास और नवाचार को बढ़ावा देना है।
 - यह दूरदराज के क्षेत्रों में रहने वाले बच्चों के लिए मार्गदर्शन और प्रशिक्षण प्राप्त करने के साधन के रूप में कार्य कर सकता है।
 - यह पोर्टल विज्ञान इंडिया 2047 के तहत देश की आकांक्षाओं को साकार करने का अभिन्न हिस्सा है।



पादप-प्लवक प्रस्फुटन (Phytoplankton bloom)

- हाल ही में, वैज्ञानिकों को इस तथ्य के प्रमाण मिले हैं कि मरुस्थलीकरण के कारण पोषक तत्वों से युक्त धूलकण बड़ी मात्रा में मेडागास्कर के दक्षिण-पूर्व में हिंद महासागर में प्रवेश कर गए हैं। इससे पादप-प्लवक प्रस्फुटन (Phytoplankton bloom) की परिघटना देखी गई।
- पादप-प्लवकों के बारे में:
 - ये सूक्ष्म और एकल-कोशिकीय पादप (शैवाल) हैं। ये पादप समुद्र में पाए जाते हैं।
 - ये समुद्र में कार्बन सिंक और खाद्य श्रृंखला को नियंत्रित करते हैं।
 - पादप-प्लवक खाद्य श्रृंखला में प्राथमिक उत्पादक हैं।
- पादप-प्लवक प्रस्फुटन के बारे में:
 - यह पादप-प्लवकों की संख्या में अधिक वृद्धि की परिघटना है।
 - अनुकूल दशाएं: समुद्री जल सतह का गर्म तापमान, स्थिर जल, बड़ी मात्रा में पोषक तत्वों की उपलब्धता आदि।
 - प्रभाव:
 - ऐसे बायोटॉक्सिन का उत्पादन होता है, जो समुद्री खाद्य जाल में प्रवेश कर सकता है।
 - समुद्री जल में ऑक्सीजन का स्तर कम हो जाता है। इससे 'मृत क्षेत्र' (Dead Zone) का निर्माण होता है।



भारत NCX 2024

- राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद सचिवालय (NSCS) ने राष्ट्रीय रक्षा विश्वविद्यालय (RRU) के सहयोग से भारत राष्ट्रीय साइबर सुरक्षा अभ्यास (भारत NCX 2024) का उद्घाटन किया।
- NSCS देश की आंतरिक और बाहरी सुरक्षा से संबंधित सभी मामलों पर सर्वोच्च संस्था के रूप में कार्य करता है।
- भारत NCX 2024 के बारे में
 - इसका उद्देश्य नए खतरों से निपटने के लिए साइबर सुरक्षा पेशेवरों और लीडर्स को प्रशिक्षित करके भारत की साइबर सुरक्षा व्यवस्था को मजबूत करना है।
 - इसमें गहन प्रशिक्षण, लाइव-फायर सिमुलेशन और रणनीतिक निर्णय लेने का अभ्यास शामिल है। यह राष्ट्रीय स्तर के साइबर खतरे जैसी स्थिति में निर्णय लेने का अभ्यास करने हेतु विविध क्षेत्रों के वरिष्ठ प्रबंधकों को एक साथ लाएगा।



गगनयान के लिए कार्यान्वयन समझौता

- इसरो और ऑस्ट्रेलियाई अंतरिक्ष एजेंसी (ASA) ने भारत व ऑस्ट्रेलिया के बीच अंतरिक्ष गतिविधियों पर सहयोग बढ़ाने के लिए एक कार्यान्वयन समझौते पर हस्ताक्षर किए हैं।
- कार्यान्वयन समझौते के बारे में
 - यह समझौता गगनयान मिशन के लिए चालक दल और चालक दल मॉड्यूल की रिकवरी पर दोनों अंतरिक्ष एजेंसियों के बीच सहयोग को सक्षम बनाएगा।
 - यह खोज एवं बचाव कार्यों तथा कू मॉड्यूल को पुनः हासिल करने में ऑस्ट्रेलिया की भूमिका का समर्थन करता है, विशेष रूप से तब जब ऑस्ट्रेलियाई जल क्षेत्र के निकट अंतरिक्ष यान के ऊपर जाने के चरण के दौरान कोई आपातकालीन निरस्तीकरण (Abort) की स्थिति उत्पन्न हो।
- गगनयान मिशन के बारे में
 - इसका उद्देश्य तीन सदस्यीय चालक दल को तीन दिनों के लिए पृथ्वी की निचली कक्षा में भेजकर तथा उन्हें सुरक्षित रूप से पृथ्वी पर वापस लाकर भारत की मानवयुक्त अंतरिक्ष उड़ान क्षमता का प्रदर्शन करना है।



पीजोइलेक्ट्रिक मटेरियल

- भारतीय शोधकर्ताओं ने पेप्टाइड आधारित एजस्टेबल पीजोरेस्पॉन्सिव नैनोमटेरियल विकसित किया है। यह मटेरियल ऊर्जा संचयन और जैविक उपकरणों (Biodevice) के निर्माण में मदद कर सकता है।
- पेप्टाइड अमीनो एसिड की एक छोटी श्रृंखला है।
- पीजोरेस्पॉन्सिव नैनोमटेरियल (PN) के बारे में
 - PN पर जब कोई यांत्रिक दबाव पड़ता है, तो यह अपने भौतिक गुणों (जैसे विद्युत प्रतिरोध) में परिवर्तन कर लेता है।
 - यह अनोखी क्षमता दबाव पड़ने पर विद्युत आवेश उत्पन्न करने में मदद करती है।
 - इस क्षमता के कारण, इन सामग्रियों का उपयोग आमतौर पर सेंसर, एक्स्युप्टर्स और ऊर्जा संचयन करने वाले उपकरणों के निर्माण किया जाता है।
 - जब वे नैनोस्ट्रक्चर्स सामग्रियों से बने होते हैं, तो इससे बाह्य बल के प्रति उनकी संवेदनशीलता और प्रतिक्रिया बढ़ जाती है।



महापाषाण संस्कृति

- हाल ही में, केरल के कासरगोड में महापाषाण काल से जुड़ी एक पुरातात्विक खोज की गई। इस खोज में लोहे के औजारों से बनाई गई शैलकृत (rock-cut) नक्काशी प्राप्त हुई है।
- इन नक्काशियों में बच्चों और वयस्कों दोनों की मानव आकृतियों का चित्रण किया गया है।
- महापाषाण संस्कृति के बारे में
 - अवधि: लौह युग (1500 ई. पू.-500 ई. पू.) से संबंधित है।
 - महापाषाण: यह उस काल खंड को संदर्भित करता है जब शवों को जमीन के अंदर दफन कर उसे बड़े-बड़े पत्थरों से ढका जाने लगा था।
 - प्रकार: बहु-पाषाण (डोलमेन, केयर्न, क्रोमलेख, सिस्ट आदि) और एकाग्र (मेन्हिर)।
 - महापाषाण संस्कृति से संबंधित स्थल: आदिचनल्लूर व कोडुमनाल (तमिलनाडु); लिशूर और कुन्नचूर (केरल) आदि।
 - विशेषताएं: कृषि आधारित अर्थव्यवस्था; पशुचारण; धातु, लकड़ी और चीनी मिट्टी उद्योग व शिल्प; धार्मिक प्रथाएं (जीववाद) आदि।

सुर्खियों में रहे स्थल



एंटीगुआ और बारबुडा (राजधानी: सेंट जॉन्स)

- प्रधान मंत्री ने गुयाना के जॉर्जटाउन में दूसरे भारत-कैरिबिअन शिखर सम्मेलन (India-CARICOM Summit) के अवसर पर एंटीगुआ और बारबुडा के प्रधान मंत्री से भेंट की।
- भौगोलिक अवस्थिति:
 - एंटीगुआ और बारबुडा एक कैरिबियन द्वीप है। यह पूर्वी कैरिबियन सागर के लेसर एंटीलिज में अवस्थित है।
 - समुद्री सीमा: इसके उत्तर-पश्चिम में एंगुइला (यूनाइटेड किंगडम) और सेंट बार्थेलेमी (फ्रांस), पश्चिम में सेंट किट्स व नेविस संघ, दक्षिण-पश्चिम में मोटिएराट (यूनाइटेड किंगडम) तथा दक्षिण-पूर्व में ग्वाडेलोप (फ्रांस) अवस्थित हैं।
- भौगोलिक विशेषताएं
 - एंटीगुआ की तटरेखा काफी जटिल है। इसमें कई खाड़ियाँ व उच्च अंतरीप (हेडलैंड्स) शामिल हैं, जो चट्टानों और उथले जल से घिरे हुए हैं।
 - सबसे ऊंची चोटी: माउंट ओवामा।
- कैरिबियाई द्वीपों के बारे में, ये द्वीप वेस्ट इंडीज के नाम से भी मशहूर हैं
 - ये द्वीप अटलांटिक महासागर में, फ्लोरिडा के दक्षिण-पूर्व में, मध्य अमेरिका के पूर्व में और दक्षिण अमेरिका के उत्तर में अवस्थित हैं।
 - कैरिबियन सागर में उत्तर-पश्चिम में ग्रेटर एंटीलिज द्वीप और दक्षिण-पूर्व में लेसर एंटीलिज द्वीप स्थित हैं।

